Dr. Sunil Kr. "Suman"
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II(H)
Paper II
Date:- 16-9-20
DO-Next class

Psychosexual Development Stages.

(1) मुखवर्ती दंतदंशन की अवस्था (Oral biting Stage):- इस अवस्था की शुरुआत सामान्यतः सातवें महीना से होती है जब शिशुओं में दाँत निकलने को हो जाते हैं। इस अवस्था में प्रारंभ होते ही शिशुओं को स्तनपान माँ बन्द कर देती है जिसे दूध-छुड़ाई (weaning) कहा जाता है। दूध छुड़ाई (weaning) की प्रक्रिया प्रारंभ होने से शिशुओं में कुंठा (Frustration) होता है जिससे उसे मानसिक आघात भी पहुँचता है। इसके परिणामस्वरूप वह अपने आदर के लिए स्वयं निर्देशित क्रियाएं (self-directed activities) करता है। इस अवस्था में चूँकि शिशुओं में दाँत निकलने लगते हैं, अतः अपनी आक्रमण प्रवृत्तियों को दिखलाने के लिए वह दंत दंशन (biting) करना प्रारंभ कर देता है। फ्रायड के अनुसार इस अवस्था में माँ का स्तन न मिलने से शिशु उत्पन्न कुंठा को दो तरह की प्रक्रियाओं को अपनाता है दंतदंशन (biting) की प्रक्रिया तथा चबाने (chewing) की प्रक्रिया द्वारा। इस विशेषता के कारण इस अवस्था को मुखवर्ती-आक्रामक अवस्था (oral-sadistic stage) भी कहा जाता है। इस अवस्था में कुछ हद तक माँ अपने शिशुओं को स्वतंत्र छोड़कर इधर उधर भी काम काज करने लगती है जिससे शिशुओं में माँ के प्रति घृणा उत्पन्न हो जाती है। लेकिन उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

का मुख्य स्रोत माँ ही रहती है। अतः वह माँ से प्यार भी करती है। इस तरह उसमें माँ के प्रति परस्पर विरोधी भाव (ambivalent feeling) उत्पन्न हो जाता है।

फ्रायड के अनुसार इस अवस्था का भी प्रभाव प्रौढ़ावस्था (adulthood) के व्यक्तित्व विकास पर काफी प्रभाव पड़ता है। फ्रायड का कहना था की इस अवस्था पर ~~शिशुओं~~ शिशुओं में अत्यधिक या काम उत्तेजना (stimulation) होने से उसमें एक विशेष तरह का विकास होता है जिसे मुखवर्ती- आक्रमक व्यक्तित्व (oral-aggressive personality) कहा जाता है। ऐसे व्यक्ति अपने आवश्यकताओं के लिए अत्यधिक प्रभुत्व (dominance) दिखलाते हैं और अन्य की तरह से शोषण करते हैं। इस अवस्था पर स्थायीकरण (Fixation) हो जाने पर व्यक्ति निराशावादी (Pessimistic), तार्किक (argumentative) एवं कटुस्वभाव (cynical) वाला हो जाता है। इस तरह के व्यक्ति वयस्क होने पर तोड़-फोड़, क्रोध एवं अन्य प्रकार के परपीड़न कार्यों (sadistic activities) से अधिक खुश होते हैं।

मुखावस्था (oral period) में शिशुओं में उपाहं (id) प्रवृत्तियों की ही प्रधानता होती है। उनमें अभी अहं (Ego) तथा पराहं (super ego) की कोई चेतना नहीं होती है।

Next class